वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 407
ISBN-978-93-82071-94-5

# तीर्थंकर धर्मचक्र विधान

*–रचयित्री –*

**जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी**

हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद से समन्वित भगवान श्री शांतिनाथ के केवलज्ञानकल्याणक, पौष शु. दशमी-10 जनवरी 2014 के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के अमृत महोत्सव 2013-14 के अन्तर्गत प्रकशित

**-प्रकाशक-**

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान**

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org , www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

**COURTESY–JAIN BOOK DEPOT**
**C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain**
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

| प्रथम संस्करण | वीर नि. सं. 2540 | मूल्य |
|---|---|---|
| 1100 प्रतियाँ | पौष शु. दशमी, 10 जनवरी 2014 | 20/-रु. |

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित**

## वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

*–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–*

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी**
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

*–: मार्गदर्शन :–*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी**
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

*–: निर्देशक एवं सम्पादक:–*

**कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी**

*–: प्रबंध सम्पादक :–*

**जीवन प्रकाश जैन**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क**
**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

# सम्पादकीय

**–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी**

**अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।**
**आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।1।।**

**मंगलं जिनधर्मः स्यात् , जिनवाणी च मंगलम्।**
**जिनार्चा जिनगेहाश्च, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।2।।**

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन है। जिनेन्द्रदेव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते–करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य जगत में 300 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। 365 दिनों में प्रायः कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, शान्तिविधान, जिनगुणसम्पत्ति विधान आदि होते रहते हैं।

विधानों की श्रृंखला में यह 'तीर्थंकर धर्मचक्र विधान' एक नया विधान है। इसमें भगवान के समवसरण में प्रथम कटनी पर स्थित धर्मचक्र की पूजा एवं अर्घ्य हैं। यह विधान भगवान के समवसरण के अतिशय का वर्णन करने वाला है। इस विधान को करके सभी भव्यजीव अपने जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करें, मिथ्यात्व को दूरकर सम्यग्दर्शन रूपी प्रकाश को प्राप्त करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु को प्राप्त करें और वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।



# प्रस्तावना

**–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

भक्ति मार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान बना सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पाप पुंजों को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साधन गृहस्थ के षट्कर्तव्य का पालन करना उसके आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमंडल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं, इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिक पर्वों में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

पूजा विधानों की श्रृंखला में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह 'तीर्थंकर धर्मचक्र विधान' रचकर नूतन अतिशायी के रूप में हमें प्रदान किया है। भगवान के समवसरण में आठवीं भूमि श्रीमण्डप भूमि के बाद तीन कटनी है, उसमें प्रथम कटनी पर चारों दिशा में 4 धर्मचक्र, जो कि हजार आरों से सहित होते हैं, जिन्हें यक्षेन्द्र शिर पर धारण करके खड़े रहते हैं, वे चारों दिशाओं में चमकते हैं। ऐसे तीर्थंकर से सहित धर्मचक्र की पूजा करने से श्रावक एक दिन स्वयं भी धर्मचक्र के स्वामी बन जाते हैं। पूज्य माताजी ने पूजा के अंत में लिखा है–

**जो समवसरण के धर्मचक्र का, भक्ती से अर्चन करते।**
**सम्पूर्ण सौख्य सम्पत्ति पाते, अतिशायि पुण्य अर्जन करते।।**
**फिर धर्मचक्र का करें प्रवर्तन, तीर्थंकर पद पा करके।**
**कैवल्य 'ज्ञानमती' वैभव ले, सिद्धालय तिष्ठें जा करके।।**

इस धर्मचक्र विधान में समवसरण पूजा एवं तीर्थंकर धर्मचक्र पूजा ऐसी 2 पूजाएँ हैं। एक तीर्थंकर के समवसरण में 4 धर्मचक्र और 24 तीर्थंकर के समवसरण में 24 × 4 = 96 धर्मचक्र होते हैं, अतः इस विधान में 96 धर्मचक्र के 96 अर्घ्य हैं। एक पूर्णार्घ्य, 2 जयमाला और फिर प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद चौबीस तीर्थंकर स्तुति का एक काव्य है, यह चतुर्विंशतिसंधान काव्य है। इसमें चौबीस तीर्थंकर के अलग–2 चौबीस अर्थ टीकाकार ने किया है।

यह 'तीर्थंकर धर्मचक्र विधान' लघु होते हुए भी चमत्कारिक विधान है। इस विधान को करने से मिथ्यात्वरूपी अन्धकार दूर हो जाता है और सम्यक्त्वरूपी प्रकाश फैल जाता है। यह विधान अज्ञानरूपी अंधकार को भी दूर कर ज्ञान-ज्योति का प्रकाश दिलाता है। पूज्य माताजी ने प्रशस्ति में लिखा है–

**तीर्थेश प्रभु के समवसृति में, प्रथम कटनी पर दिखें।**
**ये धर्मचक्र चहुँ दिशी, हजार आरों से दिपें।**
**ये चक्र सर्वप्रकाश से, मिथ्यात्व तम को नाशते।**
**अज्ञान को भी दूर करके, ज्ञान ज्योति प्रकाशते।।**

इस विधान को करने, कराने वाले सभी महानुभाव भगवान के समवसरण का परोक्ष में दर्शन, वंदन, भक्ती करके महान पुण्य का अर्जन करें और अपने मनवांछित कार्य की सिद्धि करें, यही मंगल भावना है।



# दो शब्द

**–आर्यिका सुव्रतमती**

**सरस्वती लक्ष्मी जहाँ, नितप्रति करें प्रणाम।**
**पुण्यमयी उस धाम का, समवसरण है नाम।।**

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं–इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका चारित्रचन्द्रिका आर्यिका शिरोमणि परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 300 ग्रंथों का लेखन शुद्ध प्रासुक लेखनी से आगमानुसार किया है।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पूजाओं को पढ़ते हैं, तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं, उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा करके असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं।

इस 'तीर्थंकर धर्मचक्र विधान' में भगवान के समवसरण की पूजा एवं समवसरणमें प्रथम कटनी पर स्थित धर्मचक्र की पूजा है। पूज्य माताजी ने अनेकों समवसरणविधान की जैसे-भगवान महावीर समवसरण, भगवान पार्श्वनाथ समवसरण, भगवान शान्तिनाथ समवसरण आदि विधानों की रचना करके अनेकों बार, सैंकड़ों बार परोक्षरूप मेंभगवान के समवसरण का दर्शन, वंदन और समवसरण रचना का सूक्ष्मता से अवलोकन किया है।

अयोध्या में पूज्य माताजी की प्रेरणा से शास्त्रोक्त समतल भव्य समवसरण रचना का निर्माण हुआ है। प्रयाग में भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ का समवसरण विराजमान है। हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शान्तिनाथ का सुंदर समवसरण पूज्य माताजी की प्रेरणा से बनने जा रहा है। समवसरण की महिमा अपरम्पार है। पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने समवसरण विंशतिका में समवसरण का स्वरूप बताते हुए लिखे है–

**जहाँ पहुँचते ही दर्शक का पाप शमन होता है**
**जहाँ पहुँचते ही मानी का मान गलन होता।।**
**सबको शरण प्रदाता वह ही समवसरण माना।**
**जिनवर की उस धर्मसभा को नमूँ परमधामा।।**

इस विधान की प्रूफरीडिंग के माध्यम से समवसरण रचना के स्वाध्याय का लाभ मुझे प्राप्त हुआ है। यह विधान मेरे जीवन में एक दिन साक्षात् समवसरण का दर्शन करावें एवं भव भ्रमण को दूर करके केवलज्ञान की प्राप्ति में सहायक हो, यही मंगल भावना है। इन्हीं भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन।

## परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

# श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

**-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

**जन्मस्थान–** टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

**जन्मतिथि–** आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

**जाति–** अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

**माता-पिता–** श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

**आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–** ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

**क्षुल्लिका दीक्षा–** चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

**आर्यिका दीक्षा–** वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

**साहित्यिक कृतित्व–** अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

**डी.लिट्. की मानद उपाधि–** सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

**तीर्थ निर्माण प्रेरणा–** हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

**महोत्सव प्रेरणा–** पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

**शैक्षणिक प्रेरणा–** 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

**रथ प्रवर्तन प्रेरणा–** जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।



# विषय-दर्पण


| क्र. | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | समवसरण का वर्णन | 1 |
| 2. | समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी | 3 |
| 3. | मंगलाचरण | 6 |
| 4. | समवसरण पूजा | 8 |
| 5. | तीर्थंकर धर्मचक्र पूजा | 13 |
| 6. | प्रशस्ति | 33 |
| 7. | चौबीस तीर्थंकर स्तुति | 34 |
| 8. | समवसरण की आरती | 35 |
| 9. | तीर्थंकर धर्मचक्र विधान की आरती | 36 |
| 10. | समवसरण चालीसा | 37 |
| 11. | भजन | 39 |
| 12. | भजन | 40 |


# मण्डल का नक्शा

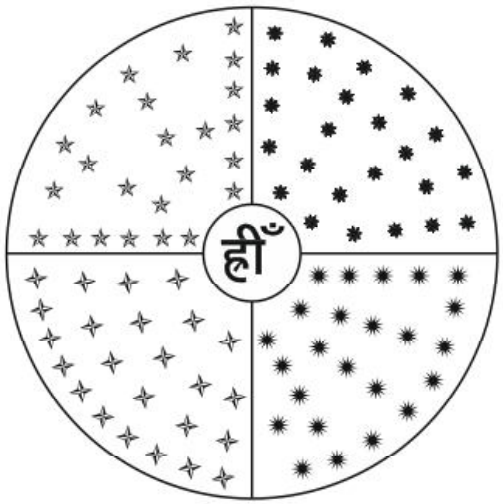


**पूजा-2, अर्घ्य-96, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-2, कुल-96 अर्घ्य**

# समवसरण का वर्णन

**ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय नमः**

भगवान को केवलज्ञान प्रगट होते ही इन्द्र की आज्ञा से कुबेर अर्धनिमिष में समवसरण की रचना कर देता है। उस समय भगवान तीनों लोकों को और उनकी भूत, भावी, वर्तमान समस्त पर्यायों को युगपत् एक समय में जान लेते हैं।

भगवान शांतिनाथ का समवसरण पृथ्वी से 5000 धनुष (20000 हाथ) ऊपर आकाश में अधर है। पृथ्वी से एक हाथ ऊपर से एक-एक हाथ ऊँची बीस हजार सीढ़ियाँ हैं। इनसे चढ़कर मनुष्य और तिर्यंच आदि सभी भव्य जीव-बाल, वृद्ध, अंधे, लूले, लंगड़े, रोगी आदि अंतर्मुहूर्त (48 मिनट) में ऊपर पहुँच जाते हैं। भगवान ऋषभदेव का समवसरण 12 योजन (96 मील) का है। आगे घटते-घटते महावीर स्वामी का समवसरण एक योजन (8 मील) का है।

इसमें चार परकोटे और पाँच वेदियाँ हैं। इनके आठ भूमियाँ हैं। चारों दिशाओं में बहुत ही विस्तृत वीथी बड़ी-बड़ी गलियाँ हैं।

इस समवसरण में क्रम से पहले धूलिसाल परकोटा, चैत्यप्रासाद भूमि, वेदी, खातिकाभूमि, वेदी, लताभूमि, परकोटा, उपवनभूमि, वेदी, ध्वजभूमि, परकोटा, कल्पभूमि, वेदी, भवनभूमि, परकोटा, श्रीमण्डपभूमि और वेदी है। आगे 16 सीढ़ी ऊपर चढ़कर पहली कटनी, 8 सीढ़ी चढ़कर दूसरी कटनी, पुनः 8 सीढ़ी



चढ़कर तीसरी कटनी है। इसी पर भगवान विराजमान हैं।

प्रत्येक परकोटे और वेदियों में चारों दिशाओं में एक-एक गोपुर द्वार हैं। जिनमें से पूर्वदिशा में "विजय", दक्षिण में "वैजयंत" पश्चिम में "जयंत" और उत्तर में "अपराजित" ऐसे नाम हैं। इन चारों के उभय पार्श्व में दो-दो नाट्यशालाएं हैं, जिनमें देवांगनाएं भगवान की भक्ति में विभोर हो नृत्य-गान करती रहती हैं। वहाँ द्वारों के दोनों और नवनिधि, मंगलघट और घूपघट आदि स्थित हैं। प्रत्येक परकोटे के द्वारों पर देवगण हाथ में दण्ड, मुद्गर आदि लेकर रक्षक बनकर खड़े हुए हैं।

## 24 तीर्थंकरों के समवसरण का प्रमाण

| | |
|---|---|
| 1. भगवान ऋषभदेव का समवसरण | 12 योजन (96 मील) |
| 2. भगवान अजितनाथ का समवसरण | $11\frac{1}{2}$ योजन (92 मील) |
| 3. भगवान संभवनाथ का समवसरण | 11 योजन (88 मील) |
| 4. भगवान अभिनंदननाथ का समवसरण | $10\frac{1}{2}$ योजन (84 मील) |
| 5. भगवान सुमतिनाथ का समवसरण | 10 योजन (80 मील) |
| 6. भगवान पद्मप्रभु का समवसरण | $9\frac{1}{2}$ योजन (76 मील) |
| 7. भगवान सुपार्श्वनाथ का समवसरण | 9 योजन (72 मील) |
| 8. भगवान चंद्रप्रभ का समवसरण | $8\frac{1}{2}$ योजन (68 मील) |
| 9. भगवान पुष्पदंतनाथ का समवसनण | 8 योजन (64 मील) |
| 10. भगवान शीतलनाथ का समवसरण | $7\frac{1}{2}$ योजन (60 मील) |
| 11. भगवान श्रेयांसनाथ का समवसरण | 7 योजन (56 मील) |
| 12. भगवान वासुपूज्यनाथ का समवसरण | $6\frac{1}{2}$ योजन (52 मील) |
| 13. भगवान विमलनाथ का समवसरण | 6 योजन (48 मील) |
| 14. भगवान अनंतनाथ का समवसरण | $5\frac{1}{2}$ योजन (44 मील) |
| 15. भगवान धर्मनाथ का समवसरण | 5 योजन (40 मील) |
| 16. भगवान शांतिनाथ का समवसरण | $4\frac{1}{2}$ योजन (36 मील) |
| 17. भगवान कुंथुनाथ का समवसरण | 4 योजन (32 मील) |
| 18. भगवान अरनाथ का समवसरण | $3\frac{1}{2}$ योजन (28 मील) |

19. भगवान मल्लिनाथ का समवसरण 3 योजन (24 मील)
20. भगवान मुनिसुव्रतनाथ का समवसरण $2\frac{1}{2}$ योजन (20 मील)
21. भगवान नमिनाथ का समवसरण 2 योजन (16 मील)
22. भगवान नेमिनाथ का समवसरण $1\frac{1}{2}$ योजन (12 मील)
23. भगवान पार्श्वनाथ का समवसरण $1\frac{1}{4}$ योजन (10 मील)
24. भगवान महावीर स्वामी का समवसरण 1 योजन (8 मील)

समवसरण में प्रवेश करते ही चारों गली में दिव्य रत्नमय मानस्तंभ हैं जो कि भगवान से बारहगुने ऊँचे हैं। जैसे कि– भगवान शांतिनाथ के शरीर की ऊँचाई 160 हाथ है अतः ये बारहगुणे अर्थात् 160×12=1920 हाथ ऊँचे हैं। बीस योजन तक प्रकाश फैलाते हैं। इनके दर्शन से मानी का मान गलित हो जाता है और वह भव्यात्मा सम्यग्दृष्टि बनकर अनंत संसार को सीमित कर लेता है।

केवली भगवान के प्रभाव से चारों तरफ चार सौ कोस तक सुभिक्षता, हिंसा और उपसर्गादि का अभाव, सभी जन्मजात शत्रु-सिंह, हिरण आदि का आपस में मैत्री भाव, छहों ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ आ जाना आदि अतिशय हो जाते हैं।

भगवान के श्रीविहार में आकाश में अधर, उनके चरण के नीचे देवगण स्वर्णमय सुगंधित दिव्य कमलों को रचते जाते हैं और अहिंसा धर्म के दिग्विजय को सूचित करता हुआ 'धर्मचक्र' भगवान के आगे-आगे चलता है एवं सरस्वती-लक्ष्मी देवी आजू-बाजू में चलती हैं। आकाशगामी ऋद्धिधारी साथ में चलते हैं, असंख्य देव-देवियाँ, इन्द्रादिगण पीछे-पीछे चलते हैं एवं साधारण मुनि, आर्यिकाएं, मनुष्य, पशु आदि नीचे-नीचे चलते हैं। जहाँ भगवान रुक जाते हैं वहाँ पुनः कुबेर समवसरण की रचना कर देता है।

## समवसरण में आठ भूमि और तीन कटनी

1. पहली ''चैत्यप्रासादभूमि'' है, इसमें एक-एक जिनमंदिर के अंतराल में पांच-पांच प्रासाद हैं।

2. दूसरी ''खातिकाभूमि'' है, इसके स्वच्छ जल में हंस आदि कलरव कर रहे हैं और कमल आदि पुष्प खिले हैं।

3. तीसरी ''लताभूमि'' है, इसमें छहों ऋतुओं के पुष्प खिले हुए हैं।



4. चौथी ''उपवनभूमि'' है, इसमें पूर्व आदि दिशा में क्रम से अशोक, सप्तच्छद, चंपक और आम्र के वन हैं। प्रत्येक वन में एक-एक चैत्यवृक्ष हैं जिनमें 4-4 जिनप्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमाओं के सामने एक-एक मानस्तंभ हैं।

5. पांचवी ''ध्वजाभूमि'' है, इसमें सिंह, गज, वृषभ, गरुड़, मयूर, चन्द्र, सूर्य, हंस, पद्म और चक्र इन दस चिन्हों से सहित महाध्वजाएं और उनके आश्रित लघुध्वजाएं 108-108 हैं। सब मिलाकर 4,70,880 हैं।

6. छठी ''कल्पभूमि'' है, इसमें भूषणांग आदि दस प्रकार के कल्पवृक्ष हैं। चारों दिशा में क्रम से नमेरु, मंदार, संतानक और पारिजात ऐसे एक-एक सिद्धार्थवृक्ष हैं। इनमें चार-चार सिद्धप्रतिमाएं विराजमान हैं ।

7. सातवीं ''भवनभूमि'' में भवन बने हुए हैं। इस भूमि के पार्श्व भागों में अर्हंत और सिद्धप्रतिमाओं से सहित नौ-नौ स्तूप हैं।

8. आठवीं ''श्रीमण्डपभूमि'' है, इसमें 16 दीवालों के बीच में 12 कोठे हैं जिनमें 1. गणधरादि मुनि, 2. कल्पवासिनी देवी, 3. आर्यिका और श्राविका, 4. ज्योतिषी देवी, 5. व्यंतर देवी, 6. भवनवासिनी देवी, 7. भवनवासी देव, 8. व्यंतर देव, 9. ज्योतिष देव, 10. कल्पवासी देव, 11. चक्रवर्ती आदि मनुष्य और 12. सिंहादि तिर्यंच, ऐसे बारहगण के असंख्यातों भव्यजीव बैठकर धर्मोपदेश सुनते हैं। वहां पर रोग, शोक, जन्म, मरण, उपद्रव आदि बाधाएं नहीं हैं।

प्रथम कटनी पर पूजा द्रव्य एवं मंगल द्रव्य रखे हुए हैं। इसी प्रथम कटनी पर चारों दिशाओं में यक्षेन्द्र अपने मस्तक पर धर्मचक्र धारण किये हुए हैं।

द्वितीय कटनी पर सिंह, बैल, कमल, चक्र, माला, गरुड़ और हाथी इन आठ चिन्हों से युक्त महाध्वजाएं हैं तथा धूपघट, नवनिधियाँ, पूजन द्रव्य एवं मंगलद्रव्य स्थित हैं।

तृतीय कटनी पर गंधकुटी में सिंहासन पर लाल कमल की कर्णिका पर भगवान शांतिनाथ चार अंगुल अधर विराजमान हैं। इनका मुख एक तरफ होते हुए भी चारों तरफ दिखने से ये चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते हैं। भगवान के पास अशोकवृक्ष, तीन छत्र, सिंहासन, भामंडल, चौंसठ चंवर, सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि बाजे और हाथ जोड़े सभासद ये आठ महाप्रातिहार्य हैं। सभी समवसरण में उन-

उन तीर्थंकर के शासन देव-देवी विद्यमान हैं। जैसे कि भगवान शांतिनाथ के समवसरण में गरुड़ यक्ष और महामानसी यक्षी विद्यमान हैं।

श्री शांतिनाथ भगवान को मेरा अनंतबार नमस्कार हो।

इस समवसरण का वर्णन तिलोयपण्णत्ति, हरिवंशपुराण और समवसरण स्तोत्र के आधार से हैं।

इस तीर्थंकर धर्मचक्र विधान में चौबीसों तीर्थंकरों के समवसरण में आठ भूमि के बाद भगवान की गंधकुटी के नीचे प्रथम कटनी पर यक्षेन्द्रों के मस्तक पर स्थित धर्मचक्र की पूजा है।



# तीर्थंकर धर्मचक्र विधान

## मंगलाचरण

**ऊँ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापिमंगलं।**
**मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।1।।**

**मानस्तंभाः सरांसि, प्रविमल-जल-सत्खातिका-पुष्पवाटी।**
**प्राकारो नाट्यशालाद्वितयमुपवनं वेदिकांतर्ध्वजाद्याः।।**
**शालः कल्पद्रुमाणां, सुपरिवृत्त-वनं स्तूप हर्म्यावली च।**
**प्राकारः स्फाटिकोन्त-र्नृसुर-मुनिसभा पीठिकाग्रे स्वयंभू।।2।।**

**श्रेयान् श्रीवासुपूज्यो वृषभजिनपतिः श्रीद्रुमांकोऽथधर्मः।**
**हर्यंकः पुष्पदन्तो मुनिसुव्रतजिनोऽनंतवाक् श्रीसुपार्श्वः।।**
**शान्तिः पद्मप्रभोऽरो विमलविभुरसौ वर्द्धमानोऽप्यजांकः।**
**मल्लिर्नेमिर्ननमिर्मां सुमतिरवतु सच्छ्रीजगन्नाथधीरम्[1]।।3।।**

**द्वौ कुंदेन्दुतुषारहारधवलौ द्वाविन्द्रनीलप्रभौ।**
**द्वौ बंधूकसमप्रभौ जिनवृषौ द्वौ चप्रियंगुप्रभौ।।**
**शेषाः षोडशजन्ममृत्युरहिताः संतप्तहेमप्रभाः।**
**ते सज्ज्ञानदिवाकराः सुरनुताः सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।।4।।**

**तीर्थकृत्सन्निधौ धर्म-चक्राणि विभान्त्यपि।**
**ते तानि चापि चक्राणि, कुर्वन्तु मम मंगलम्।।5।।**

-गीताछंद-

**तीर्थंकरों के समवसृति में, चारदिश में शोभते।**
**ये धर्मचक्र हजार आरों, से चहूँदिशि चमकते।।**

---

1. यह चतुर्विंशतिसंधान काव्य है। इसमें चौबीस तीर्थंकर के अलग-अलग चौबीस अर्थ टीकाकार ने किया है। इस विधान के अंत में चौबीस तीर्थंकरों के नमस्कार एक अर्थ दिया गया है।

**जो धर्मचक्र विधान यह, श्रावक करेंगे भक्ति से।**
**वे धर्मचक्र चलाएँगे, नित वंद्य होंगे इंद्र से।।6।।**

*–दोहा–*

**धर्मचक्र विधान यह, अतिशय महिमावान।**
**करो करावो भव्यजन, बनो स्वात्मनिधिमान।।7।।**

*।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।*



## पूजा नं.-1

# समवसरण पूजा

*स्थापना–शंभुछंद*

**तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठप्रभु समवसरण की रचना है।**
**इसमें हैं आठ भूमि सुंदर यह धनकुबेर की रचना है।।**
**अंतर का वैभव है अनंत, तीर्थंकर त्रिभुवन के स्वामी।**
**मैं वंदूं चौबीसों जिनवर, हो जाऊं निजसंपति स्वामी।।1।।**

*–दोहा–*

**आह्वानन कर मैं जजूं, तीर्थंकर परमेश।**
**आवो आवो नाथ अब, तिष्ठो हृदय हमेश।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

*अथ अष्टक–तोटक छंद*

**जलभृंग भरूं शुचि शीतल मैं।**
**भव भव की प्यास बुझे क्षण में।।**
**जिन समवसरण जजहूं नित मैं।**
**निज आत्म विशुद्धि करूँ नित मैं।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**घिस चंदन पात्र भरा रुचि से।**
**मन शीतल शुद्ध करूँ जजते।।जिन.।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**शशि रश्मि सदृश अक्षत भर के।**
**प्रभु सन्मुख पुंज चढ़ा हरसें।।**
**जिन समवसरण जजहूं नित मैं।**
**निज आत्म विशुद्धि करूँ नित मैं।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**अरविन्द गुलाब लिये सुमना।**
**जिन पाद सरोज धरूं सुमना।।जिन.।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**बरफी गुझियाँ पकवान चढ़ा।**
**निज भूख व्यथा हर सौख्य बढ़ा।।जिन.।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**घृत दीप जले जग ध्वांत टले।**
**जिन आरति से मन ज्योति जले।।जिन.।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**दश गंध जला अगनी संग में।**
**सब कर्म जलें सुख हो मन में।।जिन.।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अखरोट बदाम चढ़ा करके।**
**फल मोक्ष मिले गुण गाकर के।।जिन.।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।



**जल चंदन अक्षत पुष्प चरु।**
**वर दीप व धूप फलादि भरूँ।।जिन.।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा–*

**पद्म सरोवर नीर ले, जिनपद धार करंत।**
**तिहुं जग में मुझमें सदा, करो शांति भगवंत।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**श्वेत कमल नीलेकमल, अति सुगंध कल्हार।**
**पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले सौख्य भंडार।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

**जाप्य** –ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।
(108 बार या 9 बार जाप्य करें)

## जयमाला

*–दोहा –*

**चिन्मय चिंतामणि प्रभो, गुण अनंत की खान।**
**समवसरण वैभव सकल, वह लवमात्र समान।।1।।**

*–शंभु छंद –*

**जय जय तीर्थंकर क्षेमंकर, तुम धर्म चक्र के कर्ता हो।**
**जय जय अनंतदर्शन सुज्ञान, सुखवीर्य चतुष्टय भर्त्ता हो।।**
**जय जय अनंत गुण के धारी प्रभु तुम उपदेश सभा न्यारी।**
**सुरपति की आज्ञा से धनपति रचता है त्रिभुवन मनहारी।।2।।**

**प्रभु समवसरण गगनांगण में, बस अधर बना महिमाशाली।**
**यह इन्द्र नीलमणि रचित गोल आकार बना गुणमणिमाली।।**
**सीढ़ी इक एक हाथ ऊँची, चौड़ी सब बीस हजार बनी।**
**नर बाल वृद्ध लूले लंगड़े चढ़ जाते सब अतिशायि घनी।।3।।**

पहला परकोटा धूलिसाल, बहुवर्ण रत्न निर्मित सुंदर।
कहिं पद्मराग कहिं मरकतमणि, कहिं इन्द्रनीलमणि से मनहर।।
इसके अभ्यंतर चारों दिश, हैं मानस्तंभ बने ऊँचे।
ये बारह योजन से दिखते, जिनवर से द्विदश गुणे ऊँचे।।4।।

इनमें चारों दिश जिनप्रतिमा उनको सुरपति नरपति यजते।
ये सार्थक नाम धरें दर्शन से मानो मान गलित करते।।
इस समवसरण में चार कोट अरु पांच वेदिकाएं ऊँची।
इनके अंतर में आठ भूमि फिर प्रभु की गंधकुटी ऊँची।।5।।

इस धूलिसाल अभ्यंतर में है भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम।
एकेक जैन मंदिर अंतर से पाँच पाँच प्रासाद सुगम।।
चारों गलियों में उभय तरफ दो दोय नाट्यशालाएं हैं।
अभिनय करतीं जिनगुण गातीं सुर भवनवासि कन्याएं हैं।।6।।

फिर वेदी वेढ़ रही ऊँची गोपुर द्वारों से युक्त वहाँ।
द्वारों पर मंगलद्रव्य निधी ध्वज तोरण घंटा ध्वनी महा।।
फिर आगे खाई स्वच्छ नीर से भरी दूसरी भूमी है।
फूले कुवलय कमलों से युत हंसों के कलरव की ध्वनि है।।7।।

फिर दूजी वेदी के आगे तीजी है लताभूमि सुन्दर।
बहुरंग बिरंगे पुष्प खिले जो पुष्पवृष्टि करते मनहर।।
फिर दूजा कोट बना स्वर्णिम, गोपुर द्वारों से मन हरता।
नवनिधि मंगल घट धूप घटों युत में प्रवेश करती जनता।।8।।

आगे उद्यान भूमि चौथी चारों दिश बने बगीचे हैं।
क्रम से अशोक वन सप्तवर्ण चंपक अरु आम्र तरू के हैं।।
प्रत्येक दिशा में एक-एक तरु चैत्यवृक्ष अतिशय ऊँचे।
इनमें जिन प्रतिमा प्रातिहार्ययुत चार-चार मणिमय दीखें।।9।।

इसके आगे वेदी सुन्दर फिर ध्वजाभूमि ध्वज से शोभे।
फिर रजतवर्णमय परकोटा गोपुर द्वारों से युत शोभे।।



फिर कल्पवृक्ष भूमी छट्ठी दशविध के कल्पवृक्ष इसमें।
प्रतिदिश सिद्धार्थ वृक्ष चारों हैं सिद्धों की प्रतिमा उनमें।।10।।

चौथी वेदी के बाद भवन भूमी सप्तमि के उभय तरफ।
नव नव स्तूप रत्न निर्मित, उनमें जिनवर प्रतिमा सुखप्रद।।
परकोटा स्फटिकमयी चौथा मरकत मणि गोपुर से सुन्दर।
उस आगे श्रीमंडप भूमी बारह कोठों से जनमनहर।।11।।

फिर पंचम वेदी के आगे त्रय कटनी सुन्दर दिखती हैं।
पहली कटनी पर यक्ष शीश पर धर्मचक्र चारों दिश हैं।।
दूजी कटनी पर आठ महाध्वज नवविधि मंगल द्रव्य धरे।
तीजी कटनी पर गंधकुटी पर जिनवर दर्शन पाप हरें।।12।।

जय जय जिनवर सिंहासन पर चतुरंगुल अधर विराज रहे।
जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी सुनकर सब भविजन तृप्त भये।।
सब जातविरोधी प्राणीगण, आपस में मैत्री भाव धरें।
जो पूजें ध्यावें गुण गावें वे जिनगुण संपति प्राप्त करें।।13।।

*–दोहा–*

चिन्मय चिंतामणि प्रभो! चिंतित फल दातार।
ज्ञानमती सुख संपदा, दीजे निजगुण सार।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

*–शंभु छंद–*

जो भव्य प्रभु समवसरण की अर्चना करें।
संपूर्ण अमंगल व रोग, शोक, दुख हरें।।
निज आत्म के गुणों को संचित किया करें।
'सज्ज्ञानमती' से ही, जीवन सफल करें।।1।।

*।।इत्याशीर्वादः।।*

## पूजा नं. 2
# तीर्थंकर धर्मचक्र पूजा

*–अथ स्थापना –नरेन्द्र छंद –*

**अष्टम भूमी बाद प्रथम, कटनी वैडूर्य मणी की है।**
**बारह कोठे अरु चार गली, से सोलह बनी सीढ़ियां हैं।।**
**चूड़ी सम गोल इसी ऊपर, चारों दिश में यक्षेंद्र खड़े।**
**वे शिर पर धर्मचक्र धारें, उन पूजत सुख सौभाग्य बढ़े।।1।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितयक्षेंद्रमस्तकोपरिविराजमान-चतुश्चतुर्धर्मचक्रसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

*–अथ अष्टक (चाल-हे दीनबंधु.....)*

**मुनिराज के मनसम पवित्र नीर लिया है।**
**जिनधर्मचक्र को हि तीन धार दिया है।।**
**मैं धर्मचक्र की सदैव अर्चना करूँ।**
**जिनधर्म से हि मृत्यु की भि खंडना करूँ।।1।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिननाथ के तन सम सुगंध गंध को लिया।**
**जिनधर्मचक्र चर्च के मन शांतकर लिया।।मैं.।।2।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।



**जिनधर्मचक्र सदृश श्वेत शालि धवल हैं।**
**जिनधर्मचक्र अग्रपुंज धरूँ विमल हैं।।**
**मैं धर्मचक्र की सदैव अर्चना करूँ।**
**जिनधर्म से हि मृत्यु की भि खंडना करूँ।।3।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनयश समान सुरभि भरे फूल चुन लिये।**
**जिनधर्मचक्र के निकट अर्पण सुमन किये।।मैं।।4।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

**अमृत सदृश पूआ जलेबियां सोहाल लें।**
**जिनधर्मचक्र को चढ़ाऊँ क्षुधा टालने।।मैं.।।5।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मणिदीप में कर्पूर ज्योति आरती करूँ।**
**जिनधर्मचक्र पूजते अज्ञान तम हरूँ।।मैं.।।6।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**मैं धूपघट में धूप खेय धूम्र उड़ाऊँ।**
**जिनधर्मचक्र पूजते हि कर्म जलाऊँ।।मैं.।।7।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंगूर अनन्नास सेव लेय के भले।**
**जिनधर्मचक्र को चढ़ाऊँ मोक्षफल मिले।।मैं.।।8।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जलगंध अक्षतादि लेय रत्न मिलाऊँ।**
**जिनधर्मचक्र के समक्ष अर्घ चढ़ाऊँ।।मैं.।।9।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितचतुश्चतुर्धर्मचक्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा –*

**सुवरण झारी में भरूँ, गंगानदि को नीर।**
**शांतिधारा त्रय करूँ, मिले भवोदधि तीर।।10।।**

शांतये शांतिधारा।

**चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।**
**पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्मसुख लाभ।।11।।**

दिव्य पुष्पांजलिः।

## अथ १६ अर्घ्य

*–सोरठा –*

**धर्मचक्र चमकंत, तिहुंजग को उद्योतते।**
**पुष्पांजलि अर्पंत, पूजत भेद विज्ञान हो।।1।।**

*।।इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।*

*–नाराच छंद –*

**समोसरण जिनेश आदिनाथ का विशाल है।**
**सुपीठ उपरि धर्मचक्र सहस रश्मि जाल है।।**
**जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।**
**सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।1।।**

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनेंद्र आदिनाथ पीठ दाहिनी दिशी दिपे।**
**सुधर्मचक्र भव्य के हजार पाप को खिपे।।जिनेंद्र.।।2।।**

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**समोसरण जिनेश के सुपीठ पे अपर दिशा।**
**सुधर्मचक्र भक्त के हजार दोष टालता।।**
**जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।**
**सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।3।।**

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनेंद्र आदिनाथ के हि उत्तरी कटनीय पे।**
**सुयश शीश पे विराजमान चक्र बहु दिपे।।जिनेंद्र.।।4।।**

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अजित जिनेंद्र का समोसरण अजेय विश्व में।**
**हजार रश्मि से चमक रहा अपूर्व पूर्व में।।जिनेंद्र.।।5।।**

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनेश के समोसरणविषे सुदूर से दिखे।**
**हजार खंड मोह के करे अपूर्व तेज से।।जिनेंद्र.।।6।।**

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिदक्षिणदिक्-धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अपूर्व तेज से सुभक्त चित्त अंधकार को।**
**क्षणेक में भगावता सहस्रआर चक्र जो।।जिनेंद्र.।।7।।**

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**महान दीप्तिमान चक्र रात्रि भी न हो वहां।**
**अनेक कोटि सूर्य तेज देख लाजते[1] वहां।।जिनेंद्र.।।8।।**

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथसमवसरणस्थितप्रथमकटनी-उपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. फीके पड़ जाते हैं।

**जिनेश सम्भवेश का समोसरण चकासता[1]।**
**वहीं पे पूर्व में हि धर्मचक्र खूब भासता[2]।।**
**जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।**
**सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।9।।**

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोंपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनीश शीश नावते अपूर्व भक्तिभाव से।**
**गणीशकीर्ति धर्मचक्र की सदैव गावते।।जिनेंद्र.।।10।।**

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सुरेश पूजते सदैव अष्टद्रव्य लाय के।**
**नरेश वंदते सदैव धर्मचक्र भाव से।।जिनेंद्र.।।11।।**

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अनंत जन्म के अनंत कर्म नष्ट होयंगे।**
**सुचक्र पूजते अनंत ज्ञान सौख्य होयंगे।।जिनेंद्र.।।12।।**

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिनेश अभिनंदनेश का समोसरण दिपे।**
**वहां सुपूर्वदिक्क में सुचक्र तेज से दिपे।।जिनेंद्र.।।13।।**

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**असंख्य देव देवियां सुचक्र पूजते वहां।**
**सुअप्सरायें बांसुरी बजाय गावती वहां।।जिनेंद्र.।।14।।**

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. चमक रहा है। 2. चमकता है। 3. कटनी।



**निजात्म तत्व प्राप्ति हेतु साधु वंदना करें।**
**सुचक्र के समीप आर्यिकायें स्तोत्र उच्चरें।।जिनेंद्र.।।15।।**

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शशीकिरण हजार से अधीक रश्मियां धरे।**
**सुचक्र सौम्यकांति से दिशा प्रसन्न भी करे।।**
**जिनेन्द्र के विहार में सुअग्र अग्र ये चलें।**
**सहस्रआर धर्मचक्र पूजहूं सदा भले।।16।।**

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–दोहा –*

**सुमतिनाथ जिनराज का, समवसरण अभिराम।**
**धर्मचक्र पूरब दिशी, झुक झुक करूँ प्रणाम।।17।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समवसरणदक्षिणदिशी, धर्मचक्र चमकंत।**
**इक हजार आरों सहित, जजत उसे अघ अंत।।18।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रथम पीठ पर अपर दिश, धर्मचक्र भास्वान्।**
**सूर्यचंद्र फीका करे, पूजत स्वात्म निधान।।19।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्मचक्र उत्तरदिशी, आरे एक हजार।**
**चमचम करते शोभते, जजत मिले भवपार।।20।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पद्मप्रभू जिनराज का, समवसरण विलसंत।**
**पूजूँ श्रद्धा भक्ति से, मिले सुज्ञान अनंत।।21।।**

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**समवसरण में पीठ पर, धर्मचक्र अभिनंद्य।**
**अर्घ चढ़ाकर मैं जजूँ, सुर नर मुनिगण वंद्य।।22।।**

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**प्रथम पीठ वैडूर्यमणि, निर्मित शोभावान्।**
**धर्मचक्र को नित जजूं, रोग शोक दुख हान।।23।।**

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पद्मा लक्ष्मी तुम चरण, सेवे भक्ति भरंत।**
**धर्मचक्र की अर्चना, करते सौख्य भरंत।।24।।**

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीसुपार्श्व जिनदेव का, समवसरण सुर मान्य।**
**धर्मचक्र पूरब दिशी, जजत बनूँ जग मान्य।।25।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नत्रय निधि के धनी, वीतराग जिनदेव।**
**धर्मचक्र पूजूँ मुझे, एक रत्न ही देव।।26।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दशधर्मों के हेतु मैं, करूँ आपकी सेव।**
**धर्मचक्र पूजूँ सदा, पूरो वांछा देव।।27।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**क्रोध मान मायादि मुझ, दोष हरो जिनदेव।**
**परम शांति हित मैं करूँ, धर्मचक्र की सेव।।28।।**

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंद्रनाथ भगवान का, समवसरण अतिशायि।**
**धर्मचक्र पूजूँ सदा, जिनवर वृष सुखदायि।।29।।**

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चंद्र कांति सम आपके, गुणमणि धवल अनंत।**
**हजार आरों से दिपे, जजत चक्र भव अंत।।30।।**

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सर्व व्याधि पीड़ा नशे, धर्मचक्र पूजंत।**
**अंत समाधी हो भली, यही आश भगवंत।।31।।**

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आत्मसुखामृत पीवते, ऋद्धिधारि मुनिसंत।**
**धर्मचक्र को सेवते, निजगुणरत्न भरंत।।32।।**

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–चामर छंद–*

**पुष्पदंत नाथ का समोसरण अपूर्व है।**
**हजार आर से दिपंत धर्मचक्र पूर्व है।।**
**रोग शोक भी टलें हजार पाप शांत हों।**
**धर्मचक्र पूजते निजात्म सौख्य लाभ हो।।33।।**

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्रोध मान छद्म लोभ राग द्वेष मोह ये।**
**आतमा को कष्ट दें इन्हें निकाल दीजिए।।रोग.।।34।।**

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आप पाद पद्म सेय मैं निहाल हो गया।**
**तीन रत्न पाय के हि भाग्यशाली हो गया।।रोग.।।35।।**

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**गंध वर्ण रस स्पर्श शून्य आतमा अमूर्त।**
**आप पाद पूजते हि प्राप्त होय निज स्वरूप।।रोग.।।36।।**

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शीतलेश का समोसरण शतेंद्र पूज्य है।**
**वाक्य भी अतीव शीत सर्व दोष दूर हैं।।रोग.।।37।।**

ॐ ह्रीं श्रीशीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अंतरातमा जजें जिनेंद्र पाद भक्ति से।**
**सर्व दोष टाल के हि सिद्ध आतमा बनें।।रोग.।।38।।**

ॐ ह्रीं श्रीशीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सार्वभौम चक्रवर्ति संपदा लहें वही।**
**भक्ति से जिनेंद्र पाद पूजते सदा यहीं।।रोग.।।39।।**

ॐ ह्रीं श्रीशीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जन्म मृत्यु नाश के अपूर्व धाम दीजिये।**
**नाथ आप पास में मुझे स्थान दीजिये।।रोग.।।40।।**

ॐ ह्रीं श्रीशीतलजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**श्री श्रेयांसनाथ समोसर्ण में अधर रहें।**
**भव्य जीव के अनंत पाप को तुरत दहें।।**
**रोग शोक भी टलें हजार पाप शांत हों।**
**धर्मचक्र पूजते निजात्म सौख्य लाभ हो।।41।।**

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**साधुवृन्द आप पाद वंदते सुयश लहें।**
**आत्मरस पियूष का प्रवाह चित्त में बहे।।रोग.।।42।।**

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चार ज्ञान धारि भी गणेश आप वंदते।**
**भव्य जीव वंद वंद सर्व दोष खंडते।।रोग.।।43।।**

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो गृहस्थ नित्य अर्चना करें व दान दें।**
**वे तुरंत खार भव समुद्र पार पा सकें।।रोग.।।44।।**

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**वासुपूज्य कीर्ति को सरस्वती सदा कहे।**
**आप पाद पूज भव्य सर्व आपदा दहें।।रोग.।।45।।**

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अष्ट द्रव्य आदि से सुलेश[1] पाप हो सही।**
**विंदु मात्र विष समुद्र नीर दूषता नहीं।।रोग.।।46।।**

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सामग्री बनाने से आरंभ का पाप कुछ होता है।

**जो गृहस्थ आप बिंब औ निलय बनावते।**
**वे दु तीन ही भवों में सिद्धि सौख्य पावते।।रोग.।।47।।**

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सप्त भंग की तरंग से ध्वनी तरंगिणी।**
**भव्य पाप पंक धोय के करे पवित्रनी।।रोग.।।48।।**

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–वसंततिलका छंद –*

**तीर्थेश श्रीविमल के सुसमोसरण में।**
**यक्षेश शीश पर धर्म सु चक्र धारें।।**
**श्रीधर्मचक्र यजते मन ध्वांत[1] भागे।**
**सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।49।।**

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**आरे हजार चमकें जिनधर्म फैले।**
**मोहारि शीश झट काट स्वराज्य ले लें।।श्री.।।50।।**

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सम्यक्त्व रत्न अनमोल त्रिलोक में है।**
**जो आप भक्त उनको क्षण में मिले हैं।।श्री.।।51।।**

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्मोपदेश प्रभु का अद्भुत जगत् में।**
**जो पा लिये भुवन में धन धन्य वो हैं।।श्री.।।52।।**

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अंधेरा।



**स्वामी अनंत यम अंतक नांत गुणभृत्।**
**सौधर्म इन्द्र तुम किन्नर है शिरोनत।।श्री.।।53।।**

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीचक्र का सहज तेज अपूर्व ऐसा।**
**कोटी रवी शशि व अगनी में न वैसा।।श्री.।।54।।**

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हैं आप में विमल दर्शन ज्ञान शक्ती।**
**निर्बाध सौख्य गुणमणिनिधियाँ अनंती।।श्री.।।55।।**

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो आपके चरण में नमते सदा ही।**
**वे गुण अनंत निज के धरते सदा ही।।श्री.।।56।।**

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री धर्मनाथ निज आसन से अधर हैं।**
**मृत्यूंजयी पद सरोज नमें मुनी हैं।।श्री.।।57।।**

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो जन्म मृत्यु भव दुःख विनाश चाहें।**
**वे धर्मतीर्थ जल में नित ही नहावें।।श्री.।।58।।**

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पंचेंद्रियां मन छहों वश में करें जो।**
**छै द्रव्य को श्रद्धहें सुख से तिरें वो।।श्री.।।59।।**

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो साधु नित्य रमते जिनपाद में ही।**
**वे पावते निज सुधारस धाम जल्दी।।**
**श्रीधर्मचक्र यजते मन ध्वांत भागे।**
**सज्ज्ञानसूर्य चमके शिव सौख्य जागे।।60।।**

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री शांतिनाथ जिनके सु समोसरण में।**
**भक्ती धरें परम शांत बने क्षणों में।।श्री.।।61।।**

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो आपके चरण पंकज में नमें हैं।**
**वे सर्व वैर कलहादि स्वयं वमें हैं।।श्री.।।62।।**

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**हो पूर्ण शांति मन में इस हेतु वंदूं।**
**संपूर्ण ज्ञान सुख से निज आत्म मंडूं।।श्री.।।63।।**

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री शांतिनाथ तिहुं लोक सुशांति दाता।**
**तुम नाम मंत्र जपते मिटती असाता।।श्री.।।64।।**

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–सखी छंद –*

**श्री कुंथुनाथ जग त्राता, तुम समवसरण सुखदाता।**
**वैडूर्यमणी कटनी पे, जजुं धर्मचक्र अतिदीपे।।65।।**

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**पहली कटनी मन मोहे, अठ मंगल द्रव्य सु सोहें।**
**जिन धर्मचक्र अति चमके, सब पुण्य फले अतिदमके।।66।।**

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**इस धर्मचक्र कटनी पे, पूजन सामग्री शोभे।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूँ, भवभव के दुख से छूटूँ।।67।।**

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धन धान्य स्वजन की वृद्धी, जिन पूजत सर्व समृद्धी।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूँ, भवभव के दुख से छूटूँ।।68।।**

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो अष्टद्रव्य ले करके, जिन पूजें मन वच तन से।**
**वो पावें सुख अतिशायी, जिनधर्मचक्र सुखदायी।।69।।**

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्री अरहनाथ भगवंता, उन समवसरण विलसंता।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।70।।**

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मोहारिजयी अरनाथा, मुनि नित्य नमाते माथा।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।71।।**

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब विघ्न अरी झट भागे, पूजा से सब सुख सागे।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।72।।**

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीमल्लिनाथ भवविजयी, इन समवसरण सुखभरई।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।73।।**

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**चिन्मय चिंतामणि देवा, चिंतित फलती प्रभुसेवा।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।74।।**

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जिन कल्पतरू फलदाता, बिन मांगे सब सुखदाता।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।75।।**

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सब इष्ट फलें पूजा से, सब विघ्न भगें पूजा से।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।76।।**

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मुनिसुव्रत जिनवर भक्ती, इससे प्रगटे निज शक्ती।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।77।।**

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्नत्रय अनघ निधी है, जिनपूजा से मिलती है।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।78।।**

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो तपश्चरण नित करते, वे भी निज भक्ती धरते।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।79।।**

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**जिनभक्ती समकित निधि है, इस बिन सिद्धी नहिं हो है।**
**जिन धर्मचक्र मैं पूजूं, भवभव के दुख से छूटूँ।।80।।**

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–अडिल्ल छंद –*

**समवसरण में नमि जिनराज विराजते।**
**प्रथम पीठ पर धर्म, चक्र शुभ राजते।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।81।।**

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अशुभ कर्म के बंध, उदय सत्ता टले।**
**ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होय अतिशय भले।।सप्त.।।82।।**

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**सौम्य छवी नासाग्र दृष्टि मन को हरे।**
**सम्यग्दृष्टि भाव भक्ति से सुख भरें।।सप्त.।।83।।**

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अशुभ योग से बचूँ प्रवृत्ती शुभ करूँ।**
**देश चरित को धार कर्म हल्के करूँ।।सप्त.।।84।।**

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**नेमिनाथ जिन समवसरण में राजते।**
**पूजत ही निजज्ञान ज्योति हृदि भासते।।सप्त.।।85।।**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**रत्न जटित सिंहासन, छवि जन मन हरे।**
**अधर राजते जिनवर, त्रिभुवन सुख करें।।**
**सप्त परम स्थान, हेतु पूजा करूँ।**
**धर्मचक्र को जजूँ, मुक्ति लक्ष्मी वरूँ।।86।।**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**तीन छत्र शिर ऊपर, शोभें कांति से।**
**त्रिभुवन प्रभुत्ता कहें, सभी को भाव से।।सप्त.।।87।।**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**ढोरें चौंसठ चंवर यक्ष भक्ती भरे।**
**जो जन भक्ती करें सुयश जिन विस्तरें।।सप्त.।।88।।**

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**पार्श्वनाथ जिनराज, सर्व सरताज हैं।**
**समवसरण में आप, सर्व जन तात हैं।।सप्त.।।89।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**संकट मोचन शोकहरन, भविशर्ण हैं।**
**आप एक भववारिधि तारण तर्ण हैं।।सप्त.।।90।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**क्षमा मार्दव आर्जव शौच सुधर्म हैं।**
**तुम भक्ती से धर्म करें शिव शर्म हैं।।सप्त.।।91।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



**सच संयम तप त्याग, अकिंचन ब्रह्मव्रत।**
**जिन भक्ती से पूरण हों, ये धर्म सब।।सप्त.।।92।।**

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**महावीर जिन समवसरण अतिशय भरा।**
**खाई लता बगीचे से चहुंदिश हरा।।सप्त.।।93।।**

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपूर्वदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**अन्धे लंगड़े लूले बहिरे स्वस्थ हों।**
**बीस हजार सीढ़ियाँ चढ़ जिन भक्त हों।।सप्त.।।94।।**

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिदक्षिणदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**धर्म चक्र के हजार आरे चमकते।**
**अंधकार जन मन का हरते दमकते।।सप्त.।।95।।**

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिपश्चिमदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**जो परोक्ष में समवसरण को पूजते।**
**वे निश्चित प्रत्यक्ष दर्श को पावते।।सप्त.।।96।।**

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिउत्तरदिक्धर्मचक्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–पूर्णार्घ्य –दोहा –*

**एक एक जिनराज के, चार-चार वृष[1] चक्र।**
**चौबीसों के छ्यानवें, पूजत हो मम भद्र।।1।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमान-षण्णवतिधर्मचक्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।**

1. धर्मचक्र।

**जाप्य** –ॐ ह्रीं श्रीसमवसरणस्थितधर्मचक्रेभ्यो नमः।

(श्वेत पुष्प, लवंग या पीले चावल से 108 बार या 27 बार जाप्य करें)

## जयमाला

*–दोहा –*

**धर्मचक्र जिनदेव का, कहा अनादि अनंत।**
**समवसरण में राजता, अतः आदि भी अंत।।1।।**

*–रोला छंद –*

**जय जय श्रीजिनदेव, जय जय श्री भगवंता।**
**जय जय तुमपद सेव, करते मुनिगण संता।।**
**जय जय सुर नर वंद्य, चरण कमल अतिशायी।**
**मिले निजातम सद्म, साम्य सुधारस पायी।।2।।**

**जो तुम भक्ति करंत, पुण्य भंडार भरे हैं।**
**कटते पाप अनंत, गुण भंडार धरे हैं।।**
**विष निर्विष हो जाय, सर्प बनें सुम[1] माला।**
**शत्रु मित्र हो जाय, अग्नि बने जल कमला।।3।।**

**नदी सिंधु तालाब, पार करें इक क्षण में।**
**स्थल सम बन जाय, नहिं डूबे जन जल में।।**
**जो जन हों प्रतिकूल, सब अनुकूल बने हैं।**
**व्यंतर भूत पिशाच, क्षण में दूर भगे हैं।।4।।**

**कुष्ठ भगंदर आदि, व्याधि नशें भक्ती से।**
**नहिं टिक सकती आधि, आर्त भगे शक्ती से।।**
**बंधे असाता कर्म, सातामय परिणमते।**
**जो पूजें जिन चर्ण, अशुभकरम शुभ बनते।।5।।**

**इष्ट वियोग न होय, नहिं अनिष्ट संयोगा।**
**इच्छित पूरे होय, कभी न हो दुख शोका।।**

1. फूलों की।



**राजादिक सब वश्य, सब जग में यश फैले।**
**करें सभी सन्मान, शांति स्वस्थता मीले।।6।।**

**धन धान्यादिक वृद्धि, वंश फले संतति से।**
**भार्या पुत्र सुतादि, बढ़ें धर्म नीति से।।**
**श्रावक धर्म बढ़ाय, दान शील उपवासा।**
**जिन पूजा सुखदाय, करो गृहस्थ निवासा।।7।।**

**समवसरण में पीठ, नीलमणी का सुंदर।**
**धर्मचक्र हैं चार, आरे सहस मनोहर।।**
**इनको पूजें भव्य, अतिशय पुण्य बढ़ावें।**
**करें करम वन ध्वस्त, शिव रमणी को पावें।।8।।**

*–दोहा –*

**नमूँ नमूँ नित भक्ति से, धर्मचक्र तिहुंकाल।**
**ज्ञानमती सुख संपदा, देकर करो निहाल।।9।।**

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरसमवसरणस्थितप्रथमपीठोपरिविराजमान-षण्णवतिधर्मचक्रेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*–गीता छंद –*

**जो समवसरण के धर्मचक्र का, भक्ती से अर्चन करते।**
**सम्पूर्ण सौख्य सम्पति पाते, अतिशायि पुण्य अर्जन करते।।**
**फिर धर्मचक्र का करें प्रवर्तन, तीर्थंकर पद पा करके।**
**कैवल्य 'ज्ञानमति' वैभव ले, सिद्धालय तिष्ठें जा करके।।1।।**

*।। इत्याशीर्वादः।।*

# प्रशस्ति

*–गीता छंद –*

**तीर्थेश प्रभु के समवसृति में, प्रथम कटनी पर दिखें।**
**ये धर्मचक्र चहुँ दिशी, हजार आरों से दिपें।।**
**ये चक्र सर्वप्रकाश से, मिथ्यात्व तम को नाशते।**
**अज्ञान को भी दूर करके, ज्ञान ज्योति प्रकाशते।।1।।**

*–दोहा –*

**चौबीसों तीर्थेश को, नमूं अनंतों बार।**
**समवसरण में राजते, धर्मचक्र सुखकार।।2।।**

**हस्तिनापुर क्षेत्र पर, जंबूद्वीप विख्यात।**
**अतिशय जिनमंदिर यहां, अखिल विश्व में ख्यात।।3।।**

**चारित्र चक्रवर्ती गुरू, शांतिसागराचार्य।**
**उनके पट्टाधीश श्री, वीरसागराचार्य।।4।।**

**उनकी शिष्या आर्यिका, ज्ञानमति जग मान्य।**
**गणिनी मैंने भक्तिवश, रचा विधान महान।।5।।**

**जब तक जग में सौख्यप्रद, जिनशासन गुणखान।**
**तब तक भविजन हित करे, धर्मचक्र सुविधान।।6।।**

*।।इति मंगलं भूयात्।।*



# चौबीस तीर्थंकर स्तुति

**श्रेयान् श्रीवासुपूज्यो वृषभजिनपतिः श्रीद्रुमांकोऽथधर्मः।**
**हर्यंकः पुष्पदंतो मुनिसुव्रतजिनोऽनंतवाक् श्री सुपार्श्वः।।**
**शांतिः पद्मप्रभोऽरो विमलविभुरसौ वर्द्धमानोऽप्यजांकः।**
**मल्लिर्नेमिर्नमिर्मां सुमतिरवतु सच्छ्रीजगन्नाथधीरम्।।1।।**

**अन्वयार्थ—**(अथ असौ वृषभजिनपतिः) भोगभूमि के अनंतर होने वाले वे श्रीवृषभदेव जिनराज (हर्यंकः अपि) हरि–हाथी के चिह्न सहित श्री अजितनाथ, ''अपि' शब्द से हरि-अश्व चिह्न से सहित श्री संभवनाथ, हरि–बंदर चिह्न से युक्त श्री अभिनंदननाथ, हरि–चन्द्र चिह्न से सहित श्री चन्द्रप्रभु भगवान् और हरि–सर्प चिह्न से समन्वित श्री पार्श्वनाथ भगवान (सुमतिः) श्री सुमतिनाथ, (पद्मप्रभः) श्री पद्मप्रभ भगवान् (श्री सुपार्श्वः) श्री सुपार्श्वनाथ, (पुष्पदंतः) श्री पुष्पदंत भगवान (श्री द्रुमांकः) श्री द्रुम–श्रीवृक्ष चिह्न से सहित श्री शीतलनाथ, (श्रेयान्) श्री श्रेयांसनाथ (श्री वासुपूज्यः) श्री वासुपूज्य (विमलविभुः) श्री विमलनाथ (अनंतवाक्) श्री अनंतनाथ (धर्मः) श्री धर्मनाथ (शांतिः) श्री शांतिनाथ (अजांकः) अज–बकरा चिह्न से युक्त श्री कुंथुनाथ (अरः) श्री अरनाथ (मुनिसुव्रतजिनः) श्री मुनिसुव्रतजिन (मल्लिः) श्री मल्लिनाथ (नमिः) श्री नमिनाथ (नेमि) श्री नेमिनाथ (वर्द्धमानः) और श्री महावीर स्वामी ये चौबीसों तीर्थंकर भगवान (श्री जगन्नाथधीःसत्) तीनों लोकों के नाथ–स्वामी की बुद्धि से सहित हैं सत् नित्य हैं या पूज्य हैं वे (अं मां अवतु) वे मुझे स्वीकार कर मेरी रक्षा करें। अथवा (माँ श्री जगन्नाथ धीरं अवतु) मुझ पंडित जगन्नाथ भक्त की रक्षा करें।।1।।

**भावार्थ—**''हरि'' शब्द कोश के अनुसार हाथी, घोड़ा, बंदर, चन्द्र, और सर्प अर्थ में लिया गया है अतः यहाँ इन हाथी आदि चिह्नों से सहित पाँच तीर्थंकर लिये गये हैं। श्री जगन्नाथ कवि ने स्वयं इस एक श्लोक के चौबीस तीर्थंकरों की स्तुतिरूप से चौबीस अर्थ किये हैं एवं इसका ''चतुर्विंशतिसंधकाव्य'' यह नाम दिया है।

# समवसरण की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

चौबीस जिनवर के समवसरण की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

चार दिशा के मानस्तभों को भी मेरा वंदन।
मिथ्यादृष्टि जिनको लखकर पाते सम्यग्दर्शन।।प्रभु जी.....
करके दर्शन, प्रभु का वन्दन, सम्यक् का हुआ प्रचार है,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

ध्वजाभूमि के अन्दर देखो, ऊँचे ध्वज लहराएँ।
मालादिक चिन्हों से युत वे, जिनवर का यश गाएँ।। प्रभु जी.....
शुभ कल्पवृक्ष, सिद्धार्थ वृक्ष, से समवसरण सुखकार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

भवनभूमि के स्तूपों में, जिनवर बिंब विराजें।
द्वादशगण युत श्री मण्डप में, सम्यग्दृष्टि राजें।।प्रभु जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव से, शोभ रहें भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना' भव आरत टरते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।5।।

# तीर्थंकर धर्मचक्र विधान की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

प्रभु समवसरण के धर्मचक्र की, मंगलदीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया।

समवसरण के बीच प्रभू जी नासादृष्टि विराजे।
गणधर मुनि नरपति से शोभित, बारह सभा सुराजे।।प्रभु जी....
ओंकार ध्वनि, सुन करके मुनि, रत रहें स्वपर कल्याण में,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।1।।

अष्टम श्रीमण्डप भूमी के, बाद तीन कटनी हैं।
चार दिशा में धर्मचक्र से, सहित प्रथम कटनी है।।प्रभू जी.....
दूजी कटनी पर अष्ट महाध्वज नवनिधि मंगलद्रव्य हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।2।।

इक हजार आरों से युत वें, धर्मचक्र रहते हैं।
श्री जिनधर्म प्रवर्तन का, संदेश सदा कहते हैं।।प्रभू जी.....
अगणित वैभव, युत बाह्य विभव, से शोभ रहे जिनराज हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया।।3।।

धर्मचक्रयुत गंधकुटी पर, अधर प्रभू रहते हैं।
उनकी आरति से ही 'चन्दना-मती' दुख टरते हैं।। प्रभु जी.....
प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक महिमा अपरंपार है।
मैं आज उतारूँ आरतिया।।4।।

# समवसरण चालीसा

## रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

*-दोहा-*

नमन करूँ प्रभु सिद्ध को, सिद्धशिला के नाथ।
अरिहन्तों को भी नमूँ, समवसरण के साथ।।1।।
तीर्थंकर श्री ऋषभ का, प्रथम बना वह धाम।
कहा जिसे संसार में, समवसरण अभिराम।।2।।
समवसरण वैभव वही, कहूँ अंश इक मात्र।
चालीसा माध्यम बने, गुणवर्णन में सार्थ।।3।।

*-चौपाई-*

समवसरण लक्ष्मी की जय हो, तीर्थंकर प्रकृती की जय हो।।1।।
हों जयवन्त अनन्त चतुष्टय, जय जय प्रभु का वैभव अक्षय।।2।।
तप कर दिव्यज्ञान जब पाते, समवसरण वैभव प्रगटाते।।3।।
धरती से ऊँचे उठ जाते, बीस हजार हाथ तक जाते।।4।।
इन्द्राज्ञा से धनकुबेर तब, रचता समवसरण का वैभव।।5।।
बीस हजार सीढ़ियाँ बनतीं, जिस पर चढ़ जनता नहिं थकती।।6।।
बाल वृद्ध रोगी चढ़ जाते, मिनटों में प्रभुदर्शन पाते।।7।।
चउ परकोटे पाँच वेदियाँ, इनके मधि हैं आठ भूमियाँ।।8।।
धूलिसाल परकोटा पहला, मणियों की रज युक्त सुनहला।।9।।
भूमि चैत्यप्रासाद प्रथम है, जिनदर्शन से कटे विघन हैं।।10।।
पुनः वेदिका है चउतरफी, दूजी भूमि खातिका दिखती।।11।।
उस खाई में फूल खिले हैं, जल में सबके भव दिखते हैं।।12।।
वेदी वेष्टित लताभूमि है, आगे परकोटा स्वर्णिम है।।13।।
उपवन भूमी में चम्पक वन, आम्र अशोक सप्तछद के वन।।14।।
प्रतिवन में इक चैत्यवृक्ष हैं, जिनमें जिनप्रतिमा सम्मुख हैं।।15।।
वेदी आगे ध्वजाभूमि है, महाध्वजा लघु ध्वजा सहित है।।16।।
तीजा रजतमयी परकोटा, पुनः कल्पभूमी की शोभा।।17।।
कल्पवृक्ष दश इनमें दिखते, चार बने सिद्धार्थ वृक्ष हैं।।18।।



उनमें सिद्धों की प्रतिमाएँ, सिद्ध करें सबकी इच्छाएँ।।19।।
वेदी नन्तर भवन भूमि है, जिसमें नव-नव बनें स्तूप हैं।।20।।
अर्हत्सिद्धों की प्रतिमाएँ, कहतीं समवसरण महिमा ये।।21।।
पुनः बना स्फटिक कोट है, अंतिम चौथा वह सुकोट हैं।।22।।
श्रीमण्डप भूमी फिर अष्टम बारह सभा वहीं सुन्दरतम।।23।।
प्रथम सभा में गणधर मुनि हैं, कल्पवासि देवियाँ दुतिय में।।24।।
तीजी में आर्यिका-श्राविका, चौथी में ज्योतिषी देवियाँ।।25।।
व्यन्तर देवी हैं पंचम में, भवनवासि देवी षष्ठम में।।26।।
देव भवनवासी सप्तम में, व्यन्तर देव सभा अष्टम में।।27।।
नवमी में ज्योतिषी देव हैं, कल्पवासि फिर कहे देव हैं।।28।।
ग्यारहवीं में मनुज चक्रि हैं, बारहवीं में सिंह चक्रि है।।29।।
असंख्य प्राणी बैठ सभा में, प्रभु की दिव्यध्वनी को सुनते।।30।।
वेदी नन्तर गंधकुटी है, जिसमें पहले त्रय कटनी है।।31।।
मंगल द्रव्य अष्ट वहाँ शोभें, पहली कटनी उनसे युत है।।32।।
दूजी पर अठ महाध्वजाएँ, प्रभु की कीर्तिध्वजा फहराएँ।।33।।
तीजी कटनी पर सिंहासन, लाल कमल कर्णिका है आसन।।34।।
उससे अधर चार अंगुल पर, ऋषभदेव जी राजे जिनवर।।35।।
चतुर्मुखी ब्रह्मा कहलाते, दिव्यध्वनि ॐकार सुनाते।।36।।
अष्टप्रातिहार्यों से संयुत, शासन देव-देवियों से युत।।37।।
इत्यादिक अनेक वैभव से, शोभित प्रभु का समवसरण है।।38।।
कब साक्षात् दर्श हो उसका, तीर्थंकर के समवसरण का।।39।।
इक दिन ऐसा समवसरण भी बने "चन्दना" मिटे मरण भी।।40।।

*-दोहा-*

वीर संवत् पच्चीस सौ, चौबिस है विख्यात।
माघ शुक्ल पंचमि तिथी, रचा गया यह पाठ।।1।।
ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, की शिष्या अज्ञान।
रचा "चन्दनामति" सुखद, जिनवर का गुणगान।।2।।
चालिस दिन तक जो पढ़े, यह चालीसा पाठ।
समवसरण दर्शन उसे, मन में देगा ठाठ।।3।।

# भजन

**–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी**

*तर्ज–सौ साल पहले.....*

**बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।**
**मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।**

**करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।**
**ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।**
**भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।**
**मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।**

**हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।**
**तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।**
**इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।**
**मैंने न जाने तब कहाँ जनमन पाया था।।2।।**

**आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।**
**तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।**
**सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।**
**मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।**

**अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।**
**बीच में ''चन्दना'' देखो प्रभू की गंधकुटी भी है।।**
**समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।**
**मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।**



# भजन

**-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

***तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....***

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।

गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।